

**लोक सभा**  
**अतारांकित प्रश्न संख्या 2386**  
**09 मई, 2016 को उत्तर के लिए**

**इस्पात का उत्पादन**

2386.श्री फिरोज़ वरुण गांधी:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या यह सच है कि देश में विनिर्मित होने वाला अधिकांश इस्पात सेकेंडरी रूट का है, इसलिए घटिया गुणवत्ता वाला है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) देश में इस्पात-उत्पादन की गुणवत्ता से संबंधित मुद्दों के प्राथमिक कारण क्या हैं;
- (ग) सरकार का देश में इस्पात के उत्पादन हेतु उपलब्ध मशीनरी की घटिया गुणवत्ता को किस प्रकार हल करने का विचार है; और
- (घ) सरकार द्वारा देश की इस्पात कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

**उत्तर**

**इस्पात और खान राज्य मंत्री**

**(श्री विष्णु देव साय)**

(क) और (ख): भारत में अधिकतर क्रूड इस्पात (लगभग 70 प्रतिशत) का उत्पादन एकीकृत इस्पात क्षेत्र अथवा गौण क्षेत्र में अपनाये गये बेसिक ऑक्सीजन फर्नेस (बीओएफ) और इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस (ईएएफ) में होता है जहाँ कि गुणवत्तापूर्ण इस्पात का उत्पादन करने के संबंध में कोई प्रौद्योगिकी समस्याएं नहीं है। शेष क्रूड इस्पात का उत्पादन इंडक्शन फर्नेस यूनिटों द्वारा किया जाता है जहाँ आदान सामग्री में निहित तत्वों, यदि कोई हो, को हटाने के लिए इस्पात को रिफाइन करने में प्रौद्योगिकीय सीमायें मौजूद है।

(ग): इस्पात मंत्रालय ने इंडक्शन फर्नेस यूनिटों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं के समाधान के लिए तौर तरीकों का पता लगाने हेतु क्षेत्रगत विशेषज्ञों का एक कोर ग्रुप गठित किया है। कोर ग्रुप की सिफारिशों के अनुसार सरकार देश में उपलब्ध आदान सामग्रियों से इंडक्शन फर्नेस में गुणवत्ता पूर्ण इस्पात उत्पादित करने के उपयुक्त तरीकों का पता लगाने से संबंधित आर एण्ड डी परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है।

(घ): इस्पात उद्योग एक नियंत्रण मुक्त क्षेत्र है और सरकार की भूमिका केवल एक सुविधादाता के रूप में होती है, जो भारतीय इस्पात क्षेत्र की वृद्धि और विकास के लिए नीतिगत दिशानिर्देश तैयार करती है और अनुकूल वातावरण स्थापित करती है। राष्ट्रीय इस्पात नीति, 2005 में भारतीय इस्पात उद्योग के लिए न केवल लागत, गुणवत्ता और उत्पाद मिश्रण के संबंध में

बल्कि कार्यकुशलता के भी वैश्विक बैंच मार्को के संबंध में वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। क्षेत्र को वैश्विक दृष्टि से प्रतिस्पर्धात्मक बनाने के लिए सरकार द्वारा की गई विविध पहल नीचे दी गई हैं:-

- भारतीय इस्पात कंपनियों ने अपनी क्षमताओं में वृद्धि करने के लिए और साथ ही वैश्विक मानकों के समकक्ष अपनी कार्यकुशलताओं में सुधार करने के लिए नवीनतम विकसित प्रौद्योगिकियों को अपनाकर पर्याप्त आधुनिकीकरण और विस्तार कार्य आरम्भ किया है।
- पर्यावरणीय दृष्टि से एक स्थिर तरीके में प्रतिस्पर्धात्मक लागत पर गुणवत्ता पूर्ण इस्पात उत्पादित करने के लिए नवीनतम और विकसित प्रौद्योगिकियों को अपनाते हुए कई नये ग्रीन फील्ड इस्पात संयंत्र स्थापित किये गये हैं।
- प्रतिस्पर्धात्मक लागत पर ओटोमोटिव स्टील जैसे मूल्य वर्धित इस्पात उत्पाद का उत्पादन करने के लिए कुछ एकीकृत इस्पात संयंत्रों द्वारा विदेशों में प्रमुख इस्पात उत्पादकों के साथ संयुक्त सहयोग करार किये गये हैं।
- विश्व स्तर पर अग्रणी कुछ उत्पादक घरेलू आवश्यकता को पूरा करने और साथ ही निर्यात के लिए मूल्य वर्धित गुणवत्ता पूर्ण इस्पात के उत्पादन हेतु पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियों की भी स्थापना कर रहे हैं।
- सरकार ने महत्वपूर्ण अंतिम उपयोग के अनुप्रयोगों में गुणवत्ता पूर्ण इस्पात के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए इस्पात और इस्पात उत्पाद (गुणवत्ता नियंत्रण) आदेश भी जारी किये हैं।
- भारतीय इस्पात उद्योग इस्पात उत्पादों की उत्पादकता, गुणवत्ता में सुधार लाने, प्रदूषण को कम करने और साथ ही उत्पादन लागत को करने के लिए भी आर एण्ड डी पर कार्य कर रहा है।
- इस्पात मंत्रालय सरकार की योजना निधि और इस्पात विकास निधि से भी वित्तीय सहायता प्रदान करके इस्पात उद्योग के आर एण्ड डी प्रयासों को पूरा कर रहा है।
- इस्पात मंत्रालय लोहा और इस्पात क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के अनुसंधान और विकास कार्य की अगुआई करने के लिए उद्योग के नेतृत्व वाले संस्थानिक तंत्र की स्थापना को भी सुगम बना रहा है।

\*\*\*